eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 11, November 2024

हिन्दी कविता में जलवायु–परिवर्तन एवं पर्यावरणीय मुद्दे : एक चिन्तन दृष्टि

प्रो0 सुमन सिंह[1]
[1]हिन्दी विभाग, दयानन्द गर्ल्स पी.जी. कॉलेज, कानपुर

Received: 24 Oct 2024 Accepted & Reviewed: 25 Nov 2024, Published : 30 November 2024

Abstract

पिछले कुछ दशकों में जलवायु परिवर्तन एक वैश्विक चिंता का विषय बन गया है। जलवायु परिवर्तन से तात्पर्य पर्यावरणीय स्थितियों में परिवर्तन से है। मानवीय गतिविधियों के कारण जलवायु परिवर्तन बहुत पहले से ही शुरू हो गया था, लेकिन हम सबको इसके विषय में पिछली सदी में पता चला है। जलवायु को नुकसान पहुँचाने वाली मानवीय गतिवधियों में वनों की कटाई, जीवाश्म ईंधन का उपयोग, औद्योगिक अपशिष्ट, प्रदूषण और बहुत कुछ शामिल है। जिसके कारण पृथ्वी के सतह के गर्म होने के कारण ओजोन परत का क्षरण होना हमारी कृषि, जल आपूर्ति और कई अन्य समस्याएँ प्रभावित होती हैं। अगर मौसम की बात करें तो अधिक गर्मी, अधिक सर्दी और अधिक वर्षा का हो या कभी–कभी सूखा पड़ जाने की घटनाएँ लगातार बढ़ रही हैं। ये परिवर्तन प्राकृतिक परिवर्तनशीलता का परिणाम नहीं है, बल्कि मुख्य रूप से मानवीय गतिविधियों से प्रेरित है।

तात्पर्य है जलवायु–परिवर्तन, पर्यावरण से जुड़ी एक गम्भीर समस्या है। यह पृथ्वी के तापमान और मौसम पैटर्न को बदलता है,जिससे ग्लोबल वार्मिंग और चरम मौसम की घटनाएँ बढ़ती हैं। इन जलवायु परिवर्तनों का पर्यावरण पर नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है। समुद्र का जल स्तर बढ़ रहा है, ग्लेशियर पिघल रहे हैं, हवा में Co_2 की मात्रा बढ़ रही है, जंगल और वन्यजीव कम हो रहे हैं और जलवायु परिवर्तन के कारण जलीय जीवन भी प्रभावित हो रहा है। इसके अलावा, यह अनुमान लगाया जा रहा है कि अगर यह बदलाव जारी रहा तो पौधों और जानवरों की कई प्रजातियाँ विलुप्त हो जाएंगी। अगर हम इन समस्याओं को नजरअंदाज करने के बजाय उन पर काम करना शुरू कर दें तो काफी हद तक पर्यावरणीय असंतुलन को रोक पाने में सफल होंगे।

मुख्य शब्द– जलवायु–परिवर्तन, हिन्दी कविता, पर्यावरणीय मुद्दे, पर्यावरणीय असंतुलन

Introduction

विश्व के सांस्कृतिक क्षितिज पर भारत वर्ष सदैव से ही अपने आध्यात्मिक ज्ञानलोक को विकीर्ण करता विश्वगुरू के पद पर सुशोभित है। भारतीय साहित्य अपने चिरन्तन काल से वैदिक संस्कार, नैतिक मूल्य एवं मानवीय संवेदनाओं से जनमानस को ओत–प्रोत करता आ रहा है, जिसके समन्वयात्मक संवर्धन से एक स्वस्थ एवं समृद्धशाली व्यक्तित्व, समाज व राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया फलीभूत होती है। "तन्मे मनः शिव संकल्पमस्तु" अर्थात् मेरा मन शुभ संकल्पों वाला हो इसी कल्याणकारी भावना के साथ हम सब पर्यावरणी मुद्दे जैसे बड़ी चुनौती का भी डटकर सामना कर सकते हैं। साहित्य हमेशा सर्वहित की भावना से अनुप्राणित होकर शुचितम कर्म करने की प्रेरणा प्रदान करता है।

हिन्दी साहित्य हमेशा सामाजिक सरोकारों को लेकर आगे बढ़ती रही है। बदलते जमाने के साथ–साथ पारिवारिक, सामाजिक, समस्याओं को उभार कर उसके समाधान के साथ एक नये विमर्श को जन्म देती है। मानव जीवन को गति और दिशा दोनों साहित्य में चित्रित होते हैं फिर भला जलवायु परिवर्तन व

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 11, November 2024

पर्यावरणीय मुद्दे जैसे गम्भीर विषय से अछूता कैसे रह जाता। समकालीन कविता काल प्रवाह की आधात और विस्फोट की कविता है। मनुष्य का मनुष्य, मनुष्य और प्रकृति, प्रकृति और पर्यावरण जैसे अनेंक टकराहटों को सहज ढंग से कवि स्वीकार करते हुए उसे कविता के माध्यम से प्रकट करता है। वर्तमान समय में अगर सबसे बड़ी समस्या कोई है तो वह है 'जलवायु परिवर्तन और पर्यावरण प्रदूषण', कारण हम सबको ज्ञात है। वर्तमान समय में जलवायु परिवर्तन सर्वाधिक चर्चित और गम्भीर मुद्दा है। कवियों ने पर्यावरण के बिगड़ते संतुलन और प्रकृति के नाना रूपों को लेकर उन्हें नये संदर्भों के बीच रखकर अपनी चिन्तन दृष्टि देने के प्रयास किये हैं।

जलवायु परिवर्तन के कारणों में वायु प्रदूषण का भी महत्वपूर्ण योगदान है, जिस कारण तमाम बीमारियाँ आक्रामक होती जा रही है। कवि दृष्टि अपने समय की हर छोटी–बड़ी घटना पर रहती है। यातायात के साधनों की प्रदूषित धुआँ, गाड़ियों के हार्न, धूल, कचरा, दमघोंटू वातावरण के खतरों को अपनी कविता के माध्यम से प्रस्तुत किया है–

"साँस लेने के लिये भी जगह होगी या नहीं
खिड़की से क्या पता
कब दिखना बन्द हो जाये हरी पत्तियों के गुच्छे
कैसा पानी कैसी हवा
ईंधन का पता नहीं क्या करेंगे।"[1]

आज जहाँ औद्योगिक उन्नति और वैज्ञानिक प्रगति ने मानव को सुविधा सम्पन्न बनाया है, वहाँ उसके दुष्परिणाम भी झेलने पड़ रहे हैं। हवा, जल, अन्न सभी प्रदूषण के शिकार हो रहे हैं और हमारे जीवन में ज़हर घोल रहे हैं कवि मानव भविष्य के प्रति चिन्तित है। इसीलिए जलवायु परिवर्तन और उसके पड़ने वाले दुष्प्रभावों को व्यक्त करते हुए रामदरश मिश्र जी कहते हैं–

"ओह! कैसी हवा चल रही है आजकल
कि अमराई के सारे बौर
देखते–देखते झुलस जाते हैं
बच्चे पैदा होते हैं
विकलांग हो जाते हैं
अन्न, खाने से पहले ही अपच करने लगता है
नदियाँ, अपना जल लिये दिये
खुद प्यासी रह जाती है।"[2]

आज पर्वतीय क्षेत्रों में आये दिन भूस्खलन जैसी घटनाओं की खबर आती ही रहती है। कभी बर्फ का पिघलना तो कभी अचानक भारी वर्षा का होना एक गम्भीर समस्या बन गयी है। प्रौद्योगिकी ने पहाड़ों और जंगलों का विनाश करने में कोई कसर नहीं छोड़ी। इस कविता के माध्यम से कवि वर्तमान पहाड़ी जीवन में घट रही घटनाओं को बहुत ही गम्भीरता के साथ प्रस्तुत किया है–

"पहाड़ियों पर बन गये
ईंट सीमेन्ट के मकान

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 11, November 2024

बिछ गये बहुत से अजनबी तार
चमकती है कहीं–कहीं
पहाड़ियाँ रात में
हम सराहते हैं यह दृश्य भी
पर ठीक उसी वक्त कहाँ से आती है एक कराह भी?"3

बढ़ता वैश्विम तापमान आधुनिक जीवन शैली के तात्कालिक विकास की अवधारणा का परिणाम है। ऐसा विकास जो हमारी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु अतिशीघ्र उपलब्ध संसाधनों के क्षणिक प्रयोग से है। जैसे जैसे व्यक्ति के क्रयशक्ति में इजाफा हो रहा है वैसे वैसे हमारी विलासिता के संसाधनों के उपयोग भी बढ़ रहे हैं जो जलवायु परिवर्तन के प्रमुख कारणों में से एक है। डॉ. रामदरश मिश्र ने इस संदर्भ में लिखा है कि "प्रकृति की संवेदनशीलता मानव को प्रभावित करती है किन्तु जहाँ औद्योगिक विकास के अंधे मानव ने प्रकृति को चुनौती माना और उस पर विजय प्राप्त करने की इच्छा करने लगा वहीं से मानवता और प्रकृति में संघर्ष शुरू हुआ जिसका परिणाम सामने है।"

इस संदर्भ में प्रकृति का ध्वंसात्मक रूप कामायनी के चिन्ता सर्ग में दर्शनीय है–

"पंचभूतों का भैरव मिश्रण शमपातों का सकल निपात,
उल्का लेकर अमर शक्तियाँ, खोज रहीं ज्यों खोया प्रात!"[4]

इसी प्रकार सुमित्रानंदन पंत ने भी ध्वंसाशेष और परिवर्तन में प्रकृति के इस रूप का त्रिण कर संदेश दिया है कि प्रकृति जहाँ सौम्य रूप में रमणीय है और हमारे जीविका के संसाधन उपलब्ध कराती है। वहीं जब हम इसका दोहन व शोषण करते हैं तो अपना प्रलयंकारी रूप भी दिखलाती है–

"तुम नृशंस नृप से जगती पर चढ़ अनियंत्रित
करते हो संस्कृति को उत्पीड़ित पद मर्दित"[5]

हम सबको ज्ञात है कि मानव के समक्ष कर्म के दो रूप सत् व असत् के रूप में हैं लेकिन आज हम इतने स्वार्थी हो चुके हैं कि अधिक धन प्राप्ति की लिप्सा में असत् कर्म करने लगे हैं और यह भूल जाते हैं कि प्रकृति का दोहन हमारे लिए कितना विनाशकारी है। समाज, देश व विश्व कल्याण के लिए जयशंकर प्रसाद 'कामायनी' में श्रद्धा के माध्यम से सत् कर्म करने के लिए प्रेरित करते हैं–

"अपनों में सब भर कैसे, व्यक्ति विकास करेगा।
यह एकान्त स्वार्थ भीषण है, अपना नाश करेगा।।
औरों को **हँसते देखो मनु, हँसों और सुख पाओ।**
अपने सुख को विस्तृत कर लो, सबको सुखी बनाओ।।"[6]

कहने का तात्पर्य है कि इच्छाशक्ति हो तो कोई भी समस्या इतनी विकराल नहीं हो सकती कि उसका समाधान न किया जा सके। एक तरफ जहाँ विभिन्न सम्मेलनों, समझौतों व विद्वानों के द्वारा जलवायु संकट का समाधान खोजा जा रहा है और मनुष्य को इस समस्या के प्रति जागरुक करने एवं इसको दूर करने के प्रयासों के प्रति कटिबद्ध है, वहीं कामायनी कार 'कामायनी' के माध्यम से मनुष्य के आन्तरिक प्रेरणा को जगाते हुए बाह्य जगत की चुनौती का सामना करने के लिए प्रेरित करते हैं–

"कर्म यज्ञ से जीवन के सपनों का स्वर्ग मिलेगा।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 11, November 2024

इसी विपिन में मानस की आशा का कुसुम खिलेगा।।"[7]

सम्पूर्ण विश्व की भलाई के लिए पर्यावरण को संरक्षण प्रदान करना अति आवश्यक है। विश्वमंगल की कामना करने वाले कवि की कवितायें पर्यावरण असंतुलन के दूरगामी प्रभावों के प्रति सचेत कर मनुष्य को सोचने के लिए बाध्य करती हैं। औद्योगिक विकास की गति को बरकरार रखने के साथ–साथ पर्यावरण संतुलन के लिए उसे संरक्षण प्रदान करना भी जरूरी है। इसी आशय को कवि त्रिलोचन अपनी कविता के माध्यम से कहते हैं–

"इस पृथ्वी की रक्षा मानव का अपना दायित्व है,
इसकी वनस्पतियाँ चिड़ियाँ और जीव जंतु,
उसके सहयात्री है, इसी तरह जलवायु का सारा आकाश,
अपनी अपनी रक्षा मानव से चाहते हैं,
उसकी रक्षा में मानव की या तो रक्षा है,
नहीं सर्वनाश अधिक दूर नहीं।"[8]

साहित्यकार की भूमिका समाज के प्रति अपने दायित्व को लेकर सजग है। कवि अपनी रचनाओं के माध्यम से जलवायु परिवर्तन व पर्यावरण असंतुलन से उत्पन्न भयावहता को अभिव्यक्त कर पर्यावरण के संरक्षण–संवर्धन हेतु जनता में जागरुकता लाने का प्रयास करते हैं। पर्यावरण एवं जीवन के मध्य साहित्य एक सशक्त, सम्यक् और सौहार्दपूर्ण कड़ी है। अतः भारतीय संस्कृति **की** प्रार्थना हम सबकी है–

"सर्वे भवंतु सुखिनः सर्वे संतु निरामयः।
सर्वे भद्राणि पश्यंतु मा कदि्च्द दुःख भाग भवेत।।"[9]

तभी हम सब पर मंडराते हुए इस जलवायु परिवर्तन के दुष्प्रभावों से बचा जा सकता है। इन समस्याओं को नजरंदाज करने के बजाय उन पर ईमानदारी व लगन से काम करना शुरू कर दें तो हम पृथ्वी और अपने भविष्य को बचा सकते हैं। इसी कामना के साथ–

"प्रभो! यज्ञमय सार्थक जीवन भारत का जन–जन पाये।
शान्ति व्यक्ति में, शान्ति राष्ट्र में, शान्ति विश्व में आए।।"

संदर्भ सूचीः

1. स्वच्छ भारत अभियान चुनौतियाँ एवं अवसर, डॉ. अरविंद शुक्ल, पृ.सं.186
2. स्वच्छ भारत अभियान चुनौतियाँ एवं अवसर, डॉ. अरविंद शुक्ल, पृ.सं.187
3. स्वच्छ भारत अभियान चुनौतियाँ एवं अवसर, डॉ. अरविंद शुक्ल, पृ.सं.186
4. कामायनी ,जयशंकर प्रसाद, चिंता सर्ग, पृ.सं.22–23
5. रश्मि बंध (परिवर्तन), सुमित्रानंदन पंत, पृ.सं.53
6. कामायनी, जयशंकर प्रसाद, कर्म सर्ग, पृ.सं.27
7. वही,पृ.सं.28
8. कृतिका, संपादक–वीरेन्द्र सिंह, अंक–4, जुलाई–दिसम्बर 2009
9. ऋग्वेद 10.11.14